ISSN 0975-8771
RNI : CHHBIL/2010/36213
Vol. - IV (I)
Jan. to March 2013



Educational Waves

A Quarterly Inter Disciplinary Reviewed
Refereed Research Journal



Educational Waves

Multidisciplinary Quarterly Research Journal

RNI : CHHBIL/2010/36213 Vol-IV ISSUE-I Jan. to March 2013 ISSN 0975-8771

CONTENTS

Subject	Page No.
✧ Loss of Identity in Desai's Inheritance of Loss * Biman Mandal	1-3
✧ Extent of Poverty in India: Its Causes and Government Measures * Seraphinus Kispotta	4-8
✧ CREATIVE ACCOUNTING AND MANAGERIAL DECISION ON SLECETED FINANCIAL INSTITUTION IN KOLKATA * D.K.Tiwari	9-11
✧ STUDY THE IMPACT OF NATURE OF SCHOOL ON SELF CONFIDENCE OF HIGH SCHOOL STUDENT' * Nikhat Afroj	12-14
✧ A study of sources and mechanisms leading to empowerment of women living in certain slum areas of New Delhi, India * Pratibha Mishra	15-22
✧ DUALITY OF HUMAN NATURE IN JOSEPH CONRAD'S HEART OF DARKNESS * Gurpreet Singh Bagga	23-26
✧ PHYSICO-CHEMICAL INVESTIGATION OF GROUND WATER OF SURROUNDING BILASPUR, C.G., INDIA * Manish Kr. Tiwari	27-28
✧ PHYSICO-CHEMICAL CHARACTERSTICS OF IB RIVER WATER JASHPUR DISTRICT, (C.G.) INDIA M.R. Angur ** RajivRatna Pandey *** Miss. Vijay Laxmi Gupta	29-31
✧ Technology Centered Education: Virtual Technology, EDUSAT & Innovative Practice * Sudhir Sudam Kaware ** Sunil Kumar Sain	32-34
✧"छ.ग. राज्य में वन संसाधन-आर्थिक एवं पर्यावरणीय पक्ष" * शरद चन्द्र बाजपेयी	35-37
✧छत्तीसगढ़ में कृषि विकास की संभावनाएं * विमल पटेल ** अजय तिवारी	38-40
✧बाल मजदूरी, बाल अधिकार का समाजशास्त्रीय अध्ययन * श्रीमती वृंदा सेनगुप्ता ** सतीश अग्रवाल	41-43
✧"प्रजातंत्र में सूचना का अधिकार" * एस.के. यादव ** श्रीमती ऋचा राठौर *** श्रीमती माया यादव	44-46
✧रवीन्द्रनाथ त्यागी : साहित्य और लालित्य * रमेश टण्डन	47-48

Educational Waves
Volume IV (I)

Jan.-March-2013
Page- 47 to 48

रवीन्द्रनाथ त्यागी : साहित्य और लालित्य
('पूरब खिले पलाश' के विशेष संदर्भ में)

* रमेश टण्डन

सारांश :

जो रचनाकार सरकार और राजनीति पर व्यंग्य नहीं लिख सकता उसके लिए विषय रह जाते हैं-साहित्य और नारी। यह विवशता दोनों दिशाओं में होती है- व्यंग्य नहीं कर सकते सरकार व राजनीति पर और व्यंग्य कर सकते हैं साहित्य व नारी पर। 'उर्दू-हास्य-व्यंग्य' की प्रस्तावना में रवीन्द्रनाथ त्यागी जी ने स्वीकार किया कि उन्होंने 'साहित्य और लालित्य' की ओर विशेष ध्यान दिया है। त्यागी जी ने साहित्यिक क्षेत्र की चौर्यवृत्ति, सम्पादकों की स्वेच्छाचारिता, प्रकाशकों की शोषणवृत्ति, साहित्यकारों की स्वार्थवृत्ति, आलोचकों की खेमेबाजी आदि पर कलम चलाई है और बहुत सफाई से चलाई है जैसे कत्ल करते हों और हाथ में खंजर नहीं। कलम के ये कत्ल साहित्यिक गौरव के हकदार हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र इनकी नि 'पूरब खिले पलाश' के विशेष संदर्भ में इनके लालित्य-साहित्य का रहस्योद्घाटन करता है।

व्यंग्यकार का परिचय :

आप व्यंग्य-विश्व के चतुर्थ स्तम्भ हैं। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी एवं श्रीलाल शुक्ल के बाद आपका नाम सादर स्वीकार्य है। लेखक के अतिरिक्त आपकी दूसरी प्रस्थिति भारत की केन्द्रीय सरकार में संयुक्त सचिव के रूप में रही है। इस पद से आप 1989 में सेवानिवृत्त हुए। अपने जन्मदाता के संदर्भ में आपने स्वयं लिखा है, ''न उन्होंने पुत्रियों के विवाह की कभी कोई चिंता की और न कभी मेरी शिक्षा की ओर ही कोई ध्यान दिया। जिस अभाव में मैं रहा और पढ़ा, उसका कष्ट वर्णनातीत है। मैं इतना नीच हूँ कि उस राक्षस-मानव को न कभी भूल सका और न कभी उसे माफ ही कर सका।''1

व्यंग्यकार के रूप में परिचय :

आपकी कृति से लिए निम्न उद्धरण आपको सशक्त व्यंग्यकार के रूप में स्थापित कर देता है। आपने इसमें नेताओं के नित्य कर्म को उघाड़ कर रख दिया है। ''दिन में तुलसीदास की चौपाइयाँ पढ़ता था, उसी तत्परता से रात्रि को वेश्यागमन भी करता है। एक नेता हैं और इस क्षणभंगुर संसार में जितने भी पाप हैं उन सबको सम्पन्न करना उनके बायें हाथ का खेल है। दायाँ हाथ जो है वह सिर्फ अदालत में शपथ लेने के वक्त काम में आता है।''2 दूसरा उद्धरण न्यायपालिका से संबंधित है। एक आनरेरी मजिस्ट्रेट जब एक कवि सम्मेलन में अध्यक्ष बनते हैं तो उनकी कार्य प्रणाली कुछ इस तरह की होती है,''कविता पाठ के उपरान्त प्रत्येक कवियत्री को पास बुलाकर शाबासी देते थे जिसमें कुल मिलाकर कविता की अपेक्षा कवियत्री के शरीर पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था। वे कवियत्री की कमर को अपने हाथ में लपेटते थे और हाथ से उसकी तुड्डी या कपोल का स्पर्श करते थे।''3

साहित्य-लालित्य :

'पूरब खिले पलाश' संग्रह में त्यागी जी की 20 साहित्यिक रचनाएँ हैं। इनमें 'हिन्दी दिवस', 'सरल हिन्दी के रूप में एक खुला पत्र', 'अच्छी हिन्दी', 'शब्द शास्त्र की संक्षिप्त कथा', 'हमारी राजभाषा हिन्दी', भाषा विषयक उपहासात्मक लेख हैं। 'अच्छी हिन्दी' में प्रूफ की गलतियों और बंगाली डाक्टर के हिन्दी उच्चारण से हाव-भाव उत्पन्न करने की कोशिश है। 'समानधर्मा' में विद्रोही युवा साहित्यकारों पर कटाक्ष है। त्यागी जी की नारी विषयक रचनाएँ विनोद व विलासवृत्ति से परिपूरित हैं। रवीन्द्रनाथ त्यागी जी के अनुसार, ''विद्रूपताओं और विसंगतियों के साथ-साथ नारी भी लिखने के लिए मुझे चुंबक की तरह खींचती हैं। स्थितियाँ मुझे लिखने के लिए प्रेरित करती हैं।''4 'पूरब खिले पलाश' संग्रह में नारी समर्पित इनकी नौ रचनाएँ हैं-

1.'पुराने जमाने की नायिका' में रीतिकालीन नायिका भेद के साथ नख-शिख को छोड़ शेष मध्यप्रदेश अपने पूरे और खुले वैभव के साथ मौजूद है। 2.'वेश्यावृत्ति का संदर्भ' में वेश्याओं का सांगोपांग विवरण बिना आवरण के है। इसमें वात्स्यायन युद्धकाल, आठवीं सदी, महाभारत, मुगलकाल तथा स्वातंत्र्योत्तर भारत में वेश्याओं के अभूतपूर्व शोधपूर्ण इतिहास पर समाजशास्त्र व अर्थशास्त्र की दृष्टि से विचार किया गया है। 3.'संस्त साहित्य में नारी : एक शोध प्रबंध' सुन्दरियों के विशिष्ट अंगों पर लिखा गया शोध निबंध है, प्रबंध नहीं। इसमें पहले लड़कियों के पर्यायवाची शब्दों के सूक्ष्म अर्थ का विवेचन है और फिर वैदिक काल, रामायण काल, महाभारत, कालीदास के साहित्य में नारी अंगों के सौन्दर्य पर शोध है। 4.'रीतिकाव्य में दूध-दही की चर्चा' में प्रकारान्तर से नायिकाओं की ही देह चर्चा है। गौदोहन बनाम देहदोहन का विवरण अधिक है। त्यागी जी ने प्रिय व स्वस्थ अंगों पर विशेष ध्यान दिया है। 5.'चंद्रमा की सच्ची कथा' में भी नारी के अंगों की और उसके पतन की

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

पौराणिक कथा आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत है। 6. 'प्रेमकथा' में सुंदर स्त्रियों के भेद उपयोगिता के आधार पर बताकर सुन्दर टांगों के उपयोग बताए गए हैं। 7. 'तीर्थयात्रा' सर्वाधिक पृष्ठ संख्या वाला निबंध है। इसमें स्त्री सहवास की, व्यभिचार यात्रा की, पवित्र कथा प्राचीन व आधुनिक सूचनाओं से अलंकृत की गई है। 8. 'भाद्रपद की सांझ' में बादलों के साम्य के आधार पर अधिकतर स्तनों व नितम्बों की ही उमड़न-घुमड़न चित्रित है।

कुछ स्थलों पर कुत्तों और स्त्रियों का संग-संग वर्णन है। त्यागी जी के 'पूरब खिले पलाश' संग्रह का कोई भी नारी पात्र चरित्र की दृष्टि से पवित्र नहीं है। अपनी माँ-बहनों के प्रति इतना पूजनीय भाव रखने वाले त्यागी जी जैसा भद्र पुरुष दूसरों की बहनों, पत्नियों, प्रेमिकाओं के प्रति इतनी विकृति का भाव कैसे रख सकते हैं, इस बात पर आश्चर्य होता है। त्यागी जी सामाजिक परिवर्तन भूमिका निर्मित करते हुए लिखते हैं कि जिस समाज में चरित्र को कायरता माना जाता हो, चाटुकार अपना वर्चस्व स्थापित करते हों, जहाँ पदोन्नतियाँ और पुरस्कार कर्मठता और योग्यता के बजाय पहुँच और चापलूसी से जुड़े गए हों, वह समाज व्यवस्था जर्जर और मूल्यहीन सामाजिक व्यवस्था है, और उन्हें परिवर्तित होना ही चाहिए। 'सुन्दर कली', 'उनका कुत्ता मर गया', 'कुत्ता संस्कृति', आधुनिक समाज के विद्रूप की प्रतीकात्मक व्यंग्य रचनाएँ हैं। ये उच्च वर्ग के निम्न प्रदर्शन और प्रदर्शनोप्रियता के खोखलेपन को उद्घाटित करती बोधक व्यंग्य रचनाएँ हैं। 'शोक सभा' दफ्तरी औपचारिकता की संवेदनहीनता का प्रस्तुतीकरण है। 'गांधी जयंती : एक संस्मरण' गांधी जी की याद में गांधीवादी देश में होने वाले समारोह का विडम्बना चित्रण है। 'अतिथि कक्ष' अत्यंत शालीनता से नेता जी के व्यक्तित्व के बहुरूपियेपन को प्रकाशित करता है जिसमें एकत्रित व्यक्तित्व भी नेताजी की प्रतिमूर्तियाँ हैं।

निष्कर्ष :

व्यंग्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी जी ने अपनी व्यंग्य कलम से अपने माँ-बाप तक को नहीं छोड़ा तो उनको कैसे माफ कर सकते थे जो आकंठ पाखंड, विसंगति, अनियमितता, व्यभिचार से डूबे हों। नारी जो माँ के रूप में सेवा, स्नेह, करूणा, वत्सल की देवी है, ने अपने आप को इस तरह बदल लिया है कि उनका गुण दिखना तो दूर उनका रूप भी बदल गया है। लेखक ने नारी की इसी हयाहीनता को दुत्कारा है साथ में इनकी बेबसी का स्वार्थ लाभ लेने वाले मानवों को फटकारने की कोशिश की है।

संदर्भ :

- अग्रवाल, महावीर : व्यंग्य सप्तक: एक, पृष्ठ 254
- त्यागी, रवीन्द्रनाथ : देवदार के पेड़, पृष्ठ 82-83
- त्यागी, रवीन्द्रनाथ : मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ 86
- अग्रवाल, महावीर : व्यंग्य सप्तक: एक, पृष्ठ 283
- त्यागी, रवीन्द्रनाथ : पूरब खिले पलाश
- टण्डन, रमेशकुमार : साठोत्तरी हिन्दी निबंधों में व्यंग्य : एक अनुशीलन